

विचार बिन्दु

चरित्र वृक्ष है और प्रतिष्ठा उसकी छाया। –अब्राहम लिंकन

आदि-मानव की पृथ्वी पर उत्तरजीविता

आगर निहंरथल मानव 2000 पीढ़ियों तक और रहते तो वे आज भी हमारे साथ पृथ्वी पर कहीं न कहीं साथ रहे होंगे। हमारा एक और करीबी वंशज डेनिसोवन्स को तो अब तक जीवित रहने के अपने वंश की सिर्फ 750 और पीढ़ियों की आवश्यकता पड़ी होती। लेकिन मानव जाति के रूप में आज हम, होमो सेपियन्स, पृथ्वी पर अकेले बचे हैं। हालांकि अभी तक सात या अधिक प्रकार के आदि मानव अभी तक खोजे गये हैं, उन सबके साथ हमने कभी-न-कभी पृथ्वी साझा किया था। ऐसी आम धारणा है कि होमो सेपियन्स के पूर्वजों ने बुरा, क्रूर और छोटा जीवन व्यतीत किया, जैसा कि अंग्रेजी दार्शिनिक थॉमस हॉब्स ने अपनी 1651 की पुस्तक लेविथान में लिखा है। थॉमस हॉब्स ने मनुष्यों की प्रकृति का बड़ा निराशावादी निरूपण किया है। कहने का तात्पर्य यह है कि ऐसा माना जाता है कि हमने अन्य प्रकार के आदि मानवों को मार डाला होगा, परन्तु उनके विलुप्त होने का एक संभावित कारण यह है कि जलवायु में नाटकीय उतार-चढ़ाव ने आदि मानवों की अन्य प्रजातियों को पीछे छोड़ दिया। प्रमाण बताते हैं कि ये सब छोटे-छोटे अलग-थलग समूहों में रहते थे और संभवतः यही कारण रहा होगा कि वे जलवायु परिवर्तन के थपेड़ों से अपना अस्तित्व नहीं बचा पाये।

अब यदि नवीनतम पुरातात्विक और अनुवांशिकीय शोध की मानें तो शायद यह क्रूर लोगों का अस्तित्व नहीं, बल्कि दयालु और मिलनसार लोगों का अस्तित्व था। हमारे सॉफ्ट स्किल्स जैसे सहिष्णुता, करुणा, दान, और दूसरों के साथ संबंध बनाने की इच्छा आदि इन जलवायु परिवर्तनों के बावजूद हमारे अस्तित्व के मिटने से बचे रहने का मूल रहस्य हो सकते हैं। जैसा कि हम आगे देखेंगे, रोचक बात यह है कि विद्वैत ऋषियों ने भी न केवल इन महत्वपूर्ण गुणों को पहचाना और लोगों तक इस ज्ञान को पहुंचाया, बल्कि इन्हें जीवन का आवश्यक अंग बनाने हेतु भी प्रेरित किया। इसके साथ ही जीवन का प्राचीन किन्तु आज भी क्रियाशील विज्ञान, आयुर्वेद, इन गुणों के विकसित महत्त्व को प्रतिपादित करता है।

हाल ही में हुई शोध से स्पष्ट होता है कि अन्तमान लोगों के साथ शीघ्रता से मित्रता स्थापित करने की हमारी क्षमता हमारे सतत अस्तित्व का कारण हो सकता है। उदाहरण के लिए, पुरातात्विक साक्ष्य से पता चलता है कि होमो सेपियन्स न केवल अन्य सभी मनुष्यों की तुलना में बड़े समूहों में रहते थे, बल्कि अपने समूह से परे जाकर तत्काल गठबंधन बनाने की उममें एक अद्वितीय क्षमता थी। ऐसा संभव है कि इन समाजोन्मुखी क्षमताओं ने हमें सबसे अधिक अनुकूलनीय मानव प्रजाति बनाने में मदद की हो जिस कारण हम पृथ्वी के सभी प्रकार के पारिस्थितिक तंत्रों पर पर कब्जा करने में सक्षम हैं। होमो सेपियन्स पूर्वज एक तरफ तो सभी तरह के वातावरण में रहने की सामान्यता विकसित कर पाये वहीं दूसरी ओर विशेष प्रकार के वातावरणों में रहने की विशेषज्ञता भी विकसित कर पाये। इस प्रकार हमारे पूर्वज जलवायु और पर्यावरणीय परिवर्तनशीलता का सामना करने में अधिक सक्षम रहे।

हालांकि, यह अभी भी स्पष्ट नहीं है कि हमारी अनुकूलन क्षमता का विकास कैसे हुआ। हमारे भावनात्मक स्वभाव और कमजोरियों ने ही हमें बड़ा दी है। हमारी भावनात्मक ज़रूरत ने हमें दूसरों से जुड़ने की प्रेरणा दी और इस कारण हमारे नेटवर्क के विस्तार ने हमें और अधिक लचीला बनाया जिससे हमें कई अलग-अलग वातावरणों में फलने-फूलने का मौका मिला। इस बात के कुछ प्रमाण लगभग 2 मिलियन वर्ष पूर्व देखने होंगे जब ये जटिल भावनायें उभरी होंगी। मानव के वानर जैसे पूर्वज आस्ट्रेलोपिथेकस (दक्षिणी अफ्रीका) में बीमार या घायल होमिनिन के लिए होमिनिन के लिए संभावित देखभाल के शुरूआती ज्ञात उदाहरण पाए गये हैं। उन व्यक्तियों के कंकालों में जिनमें हड्डियों की समस्या, दर्द और विकलांगता व रीड की हड्डी के टथ्युमर वाले किशोर लड़के का प्रमाण मिला है। ऐसे लोगों को लगभग निश्चित रूप से कुछ स्तर की सहायता जैसे जीवित रहने के लिए भोजन और सुरक्षा मिली होगी।

लगभग 50,000 साल पहले दक्षिण एशिया के घने जंगल के वातावरण में, जब होमो सेपियन्स ने पहली बार इस क्षेत्र को बसाया था, में भी समाजोन्मुखी सहयोग के प्रमाण पाए हैं। श्रीलंका के जंगलों में गहरे पाई गई हड्डियों के अध्ययन से पता चलता है कि होमो सेपियन्स साल भर वर्षावन में रहते थे व बंदरों और विशाल गिलहरियों का शिकार करने के विस्तार ने हमें और अधिक करके वर्षावन में रहने के विशेषज्ञ बन गये। लेकिन उनकी हड्डियों के साथ मिली कलाकृतियाँ, जैसे समुद्री खोल के मोती और शार्क के दांत, संकेत देते हैं कि उनका तटीय क्षेत्रों की आबादी के साथ भी संपर्क था। एक जंगल में और एक तट पर दो अलग-अलग आबादियों के मध्य परस्पर सामाजिक संचार का यह एक महत्वपूर्ण प्रमाण है। कालान्तर में आगे चलकर सोशल नेटवर्क के सर्वाधिक नेटवर्क जैसा कारण होने के प्रमाण बहुत मिलते हैं। यहाँ यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि प्राचीन वैदिक साहित्य में दर्शित दम (आत्म-नियंत्रण), दान (दान, उधार, गिफ्ट),

मानव जाति की प्रागैतिहासिक काल से आज तक चल रही यात्रा आगे जारी रहेगी या नहीं यह इस बात पर निर्भर करेगा क्या हम अपने उन गुणों का सदुपयोग करते रहेगें या नहीं जिनके कारण हम प्राचीन काल में अपनी जाती को बचा पाये। इस प्रश्न का उत्तर समकालीन विज्ञान के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है।

दया (सद्भावना, स्नेह, कल्याणार्थ परोपकार आदि) पर दुनिया भर में अब बहुत शोध हुई है। सोशल नेटवर्क के गठन और निरंतरता में तीनों गुणों का महत्वपूर्ण और निर्णायक योगदान है (बृहदारण्यकोपनिषत् 5.5.2): तदेतदेवेया दत्त वाग्युवदति स्तनगितुर्द द द इति दाम्यत दत्त दयध्वमिति। तदेतत्तय शिष्वेद दमं दानं दयमिति। दम (आत्म-नियंत्रण), दान (दान, उधार, गिफ्ट आदि), दया (सद्भावना, स्नेह, कल्याणार्थ परोपकार आदि) का स्वास्थ्य पर प्रभाव देखने के लिये दुनिया भर में हुई बहुत शोध हुई है। मानव के सोशल नेटवर्क के गठन और निरंतरता में तीनों गुणों का महत्वपूर्ण और निर्णायक योगदान है। इसके साथ ही यह कथन भी इस सन्दर्भ में महत्वपूर्ण है (ऋग्वेद 10.1.191.2-4): सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम्। देवा भागं यथा पूर्वं संजानाना उपासते। समानो मन्त्रः समितिः समानी समानं मनः सह चित्तमेषाम्। समानं नेत्रमधि मन्यते वः। समानेन वो हस्तिना वा हुमि। समानी वा आकृतिः समाना हृदयानि वः। समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति।। हे मनुष्यो, मिलकर चलो, मिलकर बात करो, तुम्हारे चित्त एक जैसे होकर ज्ञान प्राप्त करें, जिस प्रकार पूर्व विद्वान्, ज्ञानीजान जाने योग्य को जानते हेतु उपासना करते आये हैं। इन सबका विचार समान हो, समिति सप्ता समान हो, मन समान हो, चित्त एक समान उद्देश्य वाला हो, में तुम्हें समान विचार वाला बनाता है, तुम्हें समान खान-पान युक्त करता है। हे मनुष्यो, तुम्हारे संकल्प समान हो, तुम्हारे हृदय समान हो, तुम्हारे मन समान हो, जिससे तुम परस्पर मिलजुल कर रहो।

हमारी भावनात्मक प्रकृति के परिणामस्वरूप बने सामाजिक नेटवर्क कठिन समय के लिये एक महत्वपूर्ण बीमा पॉलिसी की तरह रहे होंगे, जिससे हमारे प्रारंभिक होमो सेपियन्स पूर्वजों को न केवल भोजन और संसाधनों बल्कि विचारों को साझा करने के अवसर मिले होंगे। बदले में हमें हमारे इन गुणों ने जलवायु की अनिश्चितताओं से अनुकूलन करने में सक्षम बनाते हैं। भारी जलवायु परिवर्तन की दशा में अपने संघर्ष के समय अपने पड़ोसियों से मदद लेने-देने में सक्षम रहने के कारण हमारे पूर्वज होमो सेपियंस अविश्वसनीय अनुकूलन कर पाये। इस प्रकार कहा जा सकता है कि क्रूरता नहीं बल्कि दयालुता और मिलनसारिता अस्तित्व को बचाने में कारगर रही।

अब बड़ा सवाल यह है कि क्या ये भावनात्मक कौशल और समाजोन्मुखी व्यवहार हमें अब भी पचड़े से बाहर निकालेंगे क्योंकि पृथ्वी पर जलवायु फिर से बदल रही है?

मानव जाति की प्रागैतिहासिक काल से आज तक चल रही यात्रा आगे जारी रहेगी या नहीं यह इस बात पर निर्भर करेगा क्या हम अपने उन गुणों का सदुपयोग करते रहेगें या नहीं जिनके कारण हम प्राचीन काल में अपनी जाती को बचा पाये। इस प्रश्न का उत्तर समकालीन विज्ञान के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है। पहला, मानव की बुद्धिमत्ता एक समग्र, बहुआनामी व्यक्तित्व विशेषता है जो व्यक्तिगत एवं सामाजिक कल्याण, जीवन-संतुष्टि, प्रसन्नता और समग्र स्वास्थ्य से संबंधित है और जीवन के इन सभी क्षेत्रों को प्रभावित करती है। वर्तमान और अद्यतन शोध की स्थिति यह है कि विजडम, बुद्धिमत्ता या प्रज्ञा के कम से कम सात घटक पहचाने जा चुके हैं। इनमें (1) सहिष्णुता एवं विचारों की विविधता को स्वीकार करना, (2) अनिश्चितता के रहते हुये भी निर्णय लेने की क्षमता, (3) भावनात्मक विनियमन या इमोशनल रेगुलेशन, (4) समाजोन्मुखी व्यवहार या प्रोसोशल बिहेवियर जिसमें आत्म-नियंत्रण, दया, सहायता और करुणा आदि शामिल हैं, (5) आत्म-समीक्षा, (6) उचित सलाह देने में तत्परता या सोशल एडवाइजिंग तथा (7) आध्यात्मिकता शामिल है। प्रज्ञा व्यक्ति को सदैव आत्म-नियंत्रित, आत्म-समीक्षक, और समाजोपयोगी बनाती है और यह मानव जाति की निरंतरता के लिये अनिवार्य होगी।

दूसरा, हमें आयुर्वेद की सलाह के अनुरूप सुखायु और हितायु प्राप्त करने हेतु प्रयत्न करते रहना होगा। सुखायु और हितायु प्रज्ञावान व्यक्त के लिये ही संभव है। यही सुखायु और हितायु प्राप्त करने हेतु मानव जाति के प्रयत्न हमारी भविष्य में उत्तरजीविता सुनिश्चित कर पायेंगे। आयुर्वेद में सुखमायुः हितमायुः दोनों रणनीतियों को एक साथ क्रियान्वित करना ही मानव जाति की उत्तरजीविता सुनिश्चित करेगा क्योंकि स्वयं के लिये सुखकारी और समाज के लिये हितकारी जीवन जीने की साझा युक्ति ही सार्वभौमिक कल्याण का रास्ता देती है (च.सू.3.0.24): तत्र शारीरमानसाभ्यां रोगाभ्यामनभिदुर्वस्य विशेषेण योवनवतः समर्थानुगतबलवीर्यशयः पौरुषपराक्रमस्यज्ञानविज्ञानेन्द्रियेन्द्रियार्थबलसमुदये वर्तमानस्य परमार्द्धिर्चरिबिबोधोभोगस्य समृद्धसर्वारम्भस्य यथैष्टिवचरिणः सुखमायुरच्यते; असुखमतो विपर्ययेण; हितैषिणः पुनर्भूतानां परस्वादुपरतस्य सत्यवादिनः शान्तस्य परीक्ष्यकारिणोऽप्रमत्तस्य त्रिविं परस्परानुपुहृतमुपसेवमानस्य पूजार्हसम्पूजकस्य ज्ञानविज्ञानोपगमशीलस्य वृद्धोपसेविनः सुविनयतरगरोषेध्यामदमानवेगस्य सततं विविधप्रदानपरस्य तपोज्ञानप्रशान्तियस्याध्यात्वविदस्तत्परस्य लोकमिमं चामुंचावेक्षमाणस्य स्मृतिमतिमतो हितमायुरच्यते; अहितमतो विपर्ययेण। शारीरिक और मानसिक रोगों से पूरी तरह मुक्त, विशेष रूप से युवावस्था, हर काल करने का सामर्थ्य और उसके अनुरूप बल, वीर्य, पराक्रम, ज्ञान, कोशल, इंद्रियो और इंद्रियों के विपर्यय के बल के समुदाय से युक्त, उत्तम धन-सम्पदा एवं विविध प्रकार के उपभोग में सक्षम, जो कार्य प्रारम्भ किये वे सभी कार्य पूर्ण हो गये हों और स्वयं की इच्छा अनुसार चलते-फिरने वाले व्यक्ति का जीवन सुखी जीवन होता है। इसके उलट दुःखी जीवन होता है। अपना कल्याण सुनिश्चित करते हुये, सभी प्राणियों के हितचिंतक, दूसरे का धन छीनने से बचने वाले, सत्य बोलने वाले, शांतिप्रिय, कार्यों को सोच विचार कर करने वाले, सावधान, अर्थ, धर्म, काम का सम्यक सेवन करने वाले, श्रेष्ठ व्यक्तियों का सम्मान करने वाले, ज्ञानशील, विज्ञानशील, शांतिशील, बड़े-बूढ़ों की सेवा करने वाले, राग, क्रोध, ईर्ष्या, मद, मान के वेगों पर जूझकोटि का नियंत्रण रखने वाले, निरंतर दानशील, नित्य आत्म-नियंत्रित, ज्ञान, शांति, विनम्रता, आध्यात्म के उच्चकाल और प्रयोग में लेने वाले, लोक-परलोक का विचार करने वाले, स्मरण-शक्ति और बुद्धि से युक्त व्यक्ति की आयु हितायु कही जाती है।

अंतिम बात यह है कि अहिंसावादी दृष्टिकोण जिसमें हमें आदि-मानव की अन्य प्रजातियों से बेहतर बनाकर निरंतर उद्विगम में मदद किया उस पर निरंतर अमल करना होगा। जलवायु परिवर्तन की दशा में सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय कारणों से संघर्ष संभव है। यह संघर्ष अंततः सभ्यताओं के विश्वास का कारण हो सकता है। हमें प्रागैतिहासिक काल में सोशल नेटवर्क के माध्यम से उत्तरजीविता सुनिश्चित होने के तथ्य को याद रखते हुये मानव जाति को बचाने का प्रयास करना होगा।

—अतिथि सम्पादक, डॉ. पीन नारायण पाण्डेय (इंडियन फारेस्ट सर्विस में वरिष्ठ अधिकारी) (यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत' से प्रेरित हैं।)

पीएम मोदी मां के 100वें वर्ष में प्रवेश करने पर जन्मदिन पर धावुक होकर एक ब्लॉग पोस्ट किया है। जिसमें उन्होंने अपनी जिंदगी की सारी बातें, उतार-चढ़ाव, सुख-दुःख, सब कुछ दिल खोलकर लिखा है।

पीएम ने अपनी मां के बलिदानों और जीवन के ऐसे पहलुओं का जिक्र किया, जिन्होंने उनके (मोदी के) आत्म-विश्वास, मन एवं व्यक्तित्व को आकार दिया। पीएम मोदी गुजरात के वडनगर में अपने घर पहुंचे और मां के पैर धोकर आशीर्वाद लिया।

पीएम मोदी ने अपनी वेबसाइट .. पर अपने इस ब्लॉग को "मां" नाम दिया है। मोदी ने ब्लॉग में लिखा पिताजी आज होते, तो बीते हफ्ते वो भी 100 वर्ष के हो गए होते।

पीएम ने आगे लिखा, "मेरी मां का जन्म, मेहसाणा जिले के विसनगर में हुआ था। मेरी मां को अपनी मां यानि मेरी नानी का प्यार नसीब नहीं हुआ था। एक शाकतीवादी, पहले आई वैश्विक महामारी ने मेरी नानी को भी मेरी मां से छीन लिया था। मां स्कूल का दरवाजा भी नहीं देखा। उन्होंने देखी तो सिर्फ गरीबी और घर में हर तरफ अभाव।"

पीएम मोदी ने लिखा, "बचपन के संघर्षों ने मेरी मां को उम्र से बहुत पहले बड़ा कर दिया था। और जब शादी हुई तो भी सबसे बड़ी बहू बननी।

उन्होंने आगे लिखा, "घर चलाने के लिए दो चार पैसे ज्यादा मिल जाए, इसके लिए मां दूसरों के घर के बर्तन भी मांजा करती थीं, चरखा भी चलाया करती थीं, कपास के छिलके से रूई निकालने का काम, रूई से धागे बनाने का काम, ये सब कुछ मां ही करती थीं। उन्हें डर रहता था कि खुद के छिलकों के कांटें हमें चुभ ना जाएं।"

दुनिया का कोई भी काना हो, कोई भी देश हो, हर संतान के मन में सबसे अनमोल स्नेह मां के लिए होता है।

पिछले ही हफ्ते मेरे भतीजे ने गांधीनगर से मां के कुछ वीडियो भेजे हैं। घर पर सोसायटी के कुछ नौजवान लड़के आए हैं, पिताजी की तस्वीर कुर्सी पर रखी है, भजन कीर्तन चल रहा है और मां मगन होकर भजन गा रही हैं, मंजौरा बजा रही हैं। मां आज भी वैसी ही हैं। शरीर की ऊर्जा थले कम हो गई है लेकिन मन की ऊर्जा यथावत है।

वडनगर के जिस घर में हम लोग रहा करते थे वो बहुत ही छोटा था। उस घर में कोई छिडकी नहीं थी, कोई बांधकर्म नहीं था, कोई शौचालय नहीं था। कूल मिलाकर मिट्टी की दीवारों और खपरैल की छत से बना वो एक-डेड कमरे का ढांचा ही हमारा घर था, उसी में मां-पिताजी, हम सब भाई-बहन रहा करते थे।

पिताजी चार बच्चे भोर में घर से निकल जाया करते थे। घर से निकलकर मंदिर जाना, प्रभु पहुंचना और फिर चाय की दुकान पर पहुंच जाना उनका नित्य कर्म रहता था। मां को भी सुबह 4 बजे उठने की आदत थी। सुबह-सुबह गेहूँ पीसना हो, बाजरा पीसना हो, चावल या दाल बीनना हो, सारे काम वो खुद करती थीं।

मुझे तालाब में नहाने का, तालाब में तैरने का बड़ा शौक था इसलिए मैं भी



मां के साथ घर में हंसते प्रधानमंत्री मोदी।

घर के कपड़े लेकर उन्हें तालाब में धोने के लिए निकल जाता था। कपड़े भी धुल जाते थे और मेरा खेल भी हो जाता था।

बारिश में हमारे घर में पानी टपकता , घर की दीवारों को नुकसान ना पहुंचे, इसलिए मां जमीन पर बर्तन रख दिया करती थीं। छत से टपकता हुआ पानी उसमें इकट्ठा होता रहता था। बाद में उसी पानी को मां घर के काम के लिए अगले 2-3 दिन तक इस्तेमाल करती थीं।

मां घर के भीतर की जमीन को गोबर से लीपती थीं। मां बिना छिडकी वाले उस घर में उपले पर ही खाना बनाती थीं। घुआं निकल नहीं पाता था इसलिए घर के भीतर की दीवारें बहुत जल्दी काली हो जाया करती थीं। मां मिट्टी की बहुत सुंदर कटोरियां बनाकर भी उन्हें सजाया करती थीं। पुरानी चीजों को रीसायकिल करने की हम भारतीयों में जो आदत है, मां उसकी भी चैंपियन रही हैं।

मां अकसर पुराने कागजों को धिगाकर, उसके साथ इमली के बीज पीसकर एक पेस्ट जैसा बना लेती थीं, फिर इस पेस्ट की मदद से वो दीवारों पर शोशे के टुकड़े चिपकाकर बहुत सुंदर चित्र बनाया करती थीं। मां इस बात को लेकर हमेशा बहुत नियम से चलती थीं कि बिस्तर बिस्कुल साफ-सुखा हो। हर काम में परफेक्शन का उनका भाव इस उम्र में भी वैसा का वैसा ही है। और गांधीनगर में अब तो पैया का परिवार है, मेरे भतीजों का परिवार है, वो कोशिश करती हैं कि आज भी अपना सारा काम खुद ही करें।

दिल्ली से मैं जब भी गांधीनगर जाता हूं, तो मुझे अपने हाथ से मिठाई जरूर खिलाती हैं। और जैसे एक मां, किसी छोटे बच्चे को कुछ खिलाकर उसका मुंह पोंछती है, वैसे ही मेरी मां आज भी मुझे कुछ खिलाने के बाद किसी रमाल से मेरा मुंह जरूर पोंछती हैं।

मुझे याद है, वडनगर में हमारे घर के पास जो नाली थी, जब उसकी सफाई के लिए कोई आता था, तो मां बिना चाय पिलाए, उसे जाने नहीं देती थीं।

गर्मी के दिनों में पक्षियों के लिए वो मिट्टी के बर्तनों में दाना और पानी जरूर रखा करती थीं। पिताजी अपनी चाय की दुकान से जो मलाई लाते थे, मां उससे बड़ा अच्छा ची बनाती थीं। और उस घी पर मोहले की गांयों का भी अधिकार था। मां हर रोज, नियम से गीमाता को रीठा खिलाती थीं।

हमारे कस्बे में जब किसी के शादी-ब्याह में सामूहिक भोज का आयोजन होता

‘माँ’

- मां दूसरों के घर के बर्तन भी मांजा करती थीं, चरखा भी चलाया करती थीं
- बड़नगर में हमारा घर बहुत छोटा था जिसमें छिडकी, शौचालय, बाथरूम नहीं था

और आज भी वैसे ही अपने छोटे से कमरे में पूरी सादगी से रहती हैं।

ईश्वर पर मां की अगाध आस्था है, हां, माला जपने की आदत सी पड़ गई है उन्होंने। दिन भर भजन और माला जपना इतना व्यथा हो जाता है कि नींद भी भूल जाती हैं। इतने बरस की होने के बावजूद, मां की यादशत अब भी बहुत अच्छी है।

2017 की बात है जब मैं यूपी चुनाव के आखिरी दिनों में, काशी में था। वहां से मैं अमदाबाद गया तो मां के लिए काशी से प्रसाद लेकर भी गया था। मां से मिला तो उन्होंने पूछा कि क्या काशी विश्वनाथ महादेव के दर्शन भी किए थे?

मां छोटे बच्चों के उपचार के कई देसी तरीके जानती हैं। वडनगर वाले घर में तो अकसर हमारे यहाँ सुबह से ही कतार लग जाती थी।

दूसरों की इच्छा का सम्मान करने की भावना, दूसरों पर अपनी इच्छा ना थोपने की भावना, मैंने मां में बचपन से ही देखा है। खासतौर पर मुझे लेकर वो बहुत ध्यान रखती थीं कि वो मेरे और मेरे निर्णयों को बीच कभी दीवार नाबनें। उनसे मुझे हमेशा प्रोत्साहन ही मिला।

मां ने कभी इसे बोझ नहीं माना। जैसे मैं महीनों-महीनों के लिए अगले में ममक छोड़ देता था। कई बार ऐसा होता था कि मैं हफ्तों-हफ्तों अन्न त्याग देता था, सिर्फ दूध ही पीया करता था। कभी तय कर लेता था कि अब 6 महीने तक मीठा नहीं खाऊंगा। सर्दी के दिनों में, मैं खुले में सोता था, नहाने के लिए मटके के उंडे पानी से नहाना करता था। मैं अपनी परीक्षा स्वयं ही ले रहा था। मां मेरे मनोभावों को समझ रही थीं। वो कोई ज्विद नहीं करती थीं। वो यही कहती थीं- ठीक है भाई, जैसा तुम्हारा मन करे।

एक दिन आखिर्कार मैंने मां-पिता को घर छोड़ने की इच्छा बताई और उनसे आशीर्वाद मांगा। मेरी बात सुनकर पिताजी बहुत दुखी हुए । वो थोड़ा खिन्न होकर बोले- तुम जानो, तुम्हारा काम जानो। लेकिन मैंने कहा कि मैं उसे बिना आशीर्वाद घर छोड़कर नहीं जाऊंगा। मां को मेरे बारे में सब कुछ पता था ही। उन्होंने फिर मेरे मन का सम्मान किया। वो बोली कि वो चाहे तो मेरी जन्मपत्री किसी को दिखा लें। मेरी एक रिस्तेदार की ज्योतिष का भी ज्ञान था। पिताजी मेरी जन्मपत्री के साथ उनसे मिले। जन्मपत्री देखने के बाद उन्होंने कहा कि उसकी तो राह ही कुछ अलग है, ईश्वर ने जहां तय किया है, वो वहीं जाएगा।

इसके कुछ घंटों बाद ही मैंने घर छोड़ दिया था। तब तक पिताजी भी बहुत सहज हो चुके थे। पिताजी ने मुझे

आशीर्वाद दिया। घर से निकलने से पहले मां ने मुझे दही और गुड भी खिलाया। वो जानती थीं कि अब मेरा आगे का जीवन कैसा होने जा रहा है। मां की ममता कितनी ही कठोर हो सकती है कोशिश करें, जब उसकी संतान घर से दूर जा रही हो, तो पिघल ही जाती है। मां की आंख में आंसू थे लेकिन मेरे लिए खुब सारा आशीर्वाद भी था। घर छोड़ने के बाद के वर्षों में, मैं जहां रहा, जिस हाल में रहा, मां के आशीर्वाद की अनुभूति हमेशा मेरे साथ रही। मां मुझसे गुजराती में ही बात करती हैं।

मेरी मां ने हमेशा मुझे अपने सिद्धांत पर डटे रहने, गरीब के लिए काम करते रहने के लिए प्रेरित किया है। मुझे याद है, जब मेरा मुखमंत्रजी बनना तय हुआ तो मैं गुजरात में नहीं था। एयरपोर्ट से मैं सीधे मां से मिलने गया था। खुशी से भरी हुई मां का पहला सवाल यही था कि क्या तुम अब यहीं रहा करोगे? मां मेरा उतर जानती थीं। फिर मुझसे बोलीं- मुझे घरकार में तुम्हारा काम तो समझ नहीं आता लेकिन मैं बस यही चाहती हूँ कि तुम कभी रिखत नहीं लेना।"

यहां दिल्ली आने के बाद मां से मिलना-जुलना और भी कम हो गया है। जब गांधीनगर जाता हूं तो कभी-कभार मां के घर जाना होता है। मां से मिलना होता है, बस कुछ पलों के लिए। लेकिन मां के मन में इसे लेकर कोई नाराजगी या दुख का भाव मैंने आज तक महसूस नहीं किया। मां का स्नेह मेरे लिए वैसा ही है, मां का आशीर्वाद मेरे लिए वैसा ही है। मां अकसर पछुती हैं- दिल्ली में अच्छा लगता है? मन लगता है? मां से जब भी फोन पर बात होती है तो यही कहती हैं कि देख भाई, कभी कोई गलत काम मत करना, बुरा काम मत करना, गरीब के लिए काम करना।

गर्वीबी से जुझते हुए परिस्थितियां कैसी भी रही हों, मेरे माता-पिता ने ना कभी ईमानदारी से रास्ता छोड़ा ना ही अपने स्वभिमान से समझौता किया। उनके पास हर मुश्किल से निकलने का एक ही तरीका था- मेहनत, दिन रात मेहनत। मेरी मां आज भी इसी प्रयास में रहती हैं कि किसी पर बोझ नहीं बनें, जितना संभव हो जाए, अपने काम खुद करें। आज भी मां से मां से मिलता हूँ, तो वो हमेशा कहती हैं कि मैं मरते समय तक किसी की सेवा नहीं लेना चाहती, बस ऐसे ही चलते-फिरते चले जाने की इच्छा है।

अभाव को हर कथा से बहुत ऊपर, एक मां की गौरव गाथा होती है। संघर्ष के हर पल से बहुत ऊपर, एक मां की इच्छाशक्ति होती है।

मां, आपकी कर्मदिन की बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

आपका जन्म शताब्दी वर्ष शुरू होने जा रहा है।

सार्वजनिक रूप से कभी आपके लिए इतना लिखने का, इतना कहने का साहस नहीं कर पाया।

आप स्वस्थ रहें, हम सभी पर आपका आशीर्वाद बना रहे, ईश्वर से यही प्रार्थना है।

अपनी अधिकारिक वेबसाइट पर 'माँ' शीर्षक से लिखा गया ब्लॉग

सांवलिया सेठ के दरबार में दो हजार किलो की स्टील रेलिंग लगवाई रेलिंग से महिला एवं पुरुष पंक्तिबद्ध क्रम से मंदिर में प्रवेश कर सकेंगे

मंडफिया, (निर्सं)। दानदाताओं की ओर से भगवान श्री सांवलिया जी सेठ के दरबार में 2 हजार किलोग्राम स्टील की रेलिंग लगाई।

मंदिर प्रभारी राजेंद्र शर्मा ने बताया कि दानदाता कंचन इंडिया लिमिटेड भीलवाड़ा के मालिक लादुराम बांगर एवं कृष्ण गोपाल बांगर की ओर से भगवान श्री सांवलिया सेठ मंदिर के मुख्य सिंह द्वार पर दर्शनार्थियों के मंदिर में जाने के लिए 2 हजार किलोग्राम की भारी स्टील की रेलिंग लगाई गई। मंदिर प्रभारी शर्मा ने बताया कि इससे महिला एवं पुरुष अलग-अलग पंक्तिबद्ध क्रम से मंदिर में प्रवेश कर



भगवान श्री सांवलिया सेठ के मंदिर में दानदाता कंचन इंडिया लिमिटेड भीलवाड़ा के मालिक लादुराम बांगर एवं कृष्ण गोपाल बांगर की ओर से मुख्य सिंह द्वार पर दो हजार किलो की स्टील की रेलिंग लगाई गई।

राशिफल रविवार 19 जून, 2022

पंडित अनिल शर्मा

आषाढ मास, कृष्ण पक्ष, षष्ठि तिथि, रविवार, विक्रम संवत् 2079, धनिष्ठा नक्षत्र प्रातः 5:56 तक, विष्कुम्भ योग दिन 10:51 तक, गर करण दिन 11:19 तक, चन्द्रमा कुम्भ राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थितिः सूर्य-मिथुन, चन्द्रमा-कुम्भ, मंगल-मीन, बुध-वृष, गुरु-मीन, शुक-वृष, शनि-कुम्भ, राहु-मेघ, केतु-तुला राशि में।

रवियोग प्रातः 5:56 से 4:53 तक है। त्रिपुष्कर योग रात्रि 4:53 से सूर्योदय तक है। भद्रा रात्रि 10:19 से सोमवार दिन 9:40 तक रहेगी। आज पंचक और फादर्स डे है।

श्रेष्ठ चौघाड़ियाः चर 7:20 से 9:03 तक, लाभ-अमृत 9:03 से 12:28 तक, शुभ 2:11 से 3:53 तक।

राहूकालः 4:30 से 6:00 तक। सूर्योदय 5:37, सूर्यास्त 7:19

मेघ

परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। सुख-सुविधाएं बढ़ेंगी। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। आर्थिक कारणों से अटक हुए कार्य बनने लगेंगे।

सिंह

परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। महत्वपूर्ण कार्यों से संबंधित वार्ता सफल रहेगी। संभावित खोस से धन प्राप्त होगा।

धनु

परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। नये-पुराने मित्रों से मुलाकात हो सकती है और मनोरंजन के कार्यक्रम बनेंगे। परिवार में सुख-सुविधाओं पर धन खर्च हो सकता है।

वृष

अपने अति आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। कार्य शीघ्रतासुरामता से बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा।

कन्या

वीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होगा। अटक हुए कार्य बनने लगेंगे। परिवार में मांगलिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। शुभ कार्यों के लिए बाहर जाना पड़ सकता है।

मकर

आर्थिक कारणों से अटक हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। महत्वपूर्ण कार्यों से संबंध में सोच-विचार हो सकता है। विवाहित मामलों से राहत मिल सकती है।

मिथुन

धार्मिक कार्यों में भाग लेने का अवसर मिलेगा। धार्मिक स्थान की यात्रा का कार्यक्रम बन सकता है। नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होगा।